

असाधार्गा Extraordinary

भाग 11—संबंध 3—अप-संबंध (ii) PART 11—Section 3—Sub-Section (ii) प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 417]

नई विल्ली, मंगलबार, जुलाई 24, 1990/श्रावण 2, 1912

__= - · · · = ==___ ' · ==___ = <u>___ · .-</u>- · · .___

No. 417]

NEW DEL!!!, TUESDAY, JULY 24, 1990/SRAVANA 2, 1912

इ.स. भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वी जाती हां जिससे कि यह अलग संकालन को साम में राखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

गृह मंत्रालय

श्र′धगूचना

नर्ष दिल्ली 😀 । ज्लाई, १०००

का.आ. 5.62(E) —एतः केन्द्रीप सरकार का यह मत है कि लोक महत्त्व के एक निश्चित सामले, भिन्न हमके बाद विनिर्दिष्ट किया गया है की जॉन करने हेनु एक जॉच श्रायोग निगुक्त करना श्रावश्यक है.

भतः, भव जांच भाषोग भवितियमः, 1952 (1952 का 60) की धारा 3 द्वारा प्रयक्त शक्तियो किंत प्रयोग करने हुए केन्द्रीय सरकार एसद्वारा एक जांच भाषोग नियुक्त करनी है जिसमें केवल एक सदस्य अर्थात् न्यायम्ति थी थी.पी. मदोन, उच्चतम न्यायालय के सेवा निवृत्त न्यायाधीण होंगा।

2772 .

- (क) मेहम विधान सभा क्षेत्र से श्रीनयाणा विधान सभा के लिए उप नताव से खड़ उम्मीदवारों में से एक उम्मीदवार, क्षे प्रमीप सिंह की 16/17 सई, 1990 की रात के दौरान हुई पृत्युगे तुराय पहले की परिध्वितया जिसके परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हुई ;
- (ख) गांथ गदीना में यहिन हिसक घटनाश्रों ने गर्वधिय तथ्य तथा इन घटनाश्रों में पुलिस प्रधिकारियों की भूमिका, तथा
- (ग) इसमें वैद्यात या असंशिक कोई घन्य गामसा।

 अांच पूरी करके आयोग तीन माह की श्रम्यां के शीलर श्रपनी रिपोर्ट केन्द्रीय नरकार को प्रस्तुत कर देगा।

4. केन्द्रीय मरकार का यह मन है कि की जाने वाली जान भी प्रश्नित तथा गामले भी श्रम्य परिस्थितियों की ध्यान में रखते हुए, जीन ध्यायोग श्रिधितयम, 1952 (1952 का 60) भी बारा 5 की उपधारा (2), उपधारा (3), उपधारा (4) तथा उपधारा (5) के मनी उपबन्धों को धायोग पर नामृ किया जाना चाहिए, श्रदा उक्त धारा 5 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त श्रिक्षित्रों का प्रयोग ६६ हुए केन्द्रीय नरकार एनव्द्रारा निदेश देती है कि उदन धारा की उपन उपन्यारा (2), (3), (4) भवा (5) के मनी उपबन्ध उन्न धार्योग पर लागू होगें।

[एफ. स. IV- 15013/1/90-नी, एस. प्रार] परेण चन्द्रे, गृह गलिब

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 24th July, 1990

S.O. 582(E).—Whereas the Central Government is of opinion that it is necessary to appoint a Commission of Inquiry for the purpose of making an inquiry into a definite matter of public importance hereinafter specified;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 3 of the Commissions of Inuity Act, 1952 (60 of 1952), the Central Government hereby appoints a Commission of Inquiry consisting of a single member, namely: Shri Justice D. P. Madon, Retired Judge of the Supreme Court of India.

- 2. The Commission shall make an inquiry with respect to the following matters:—
 - (a) the circumstances immediately preceding and resulting in the death, during the night of 16th|17th May, 1990, of Shri Amir Singh, one of the candidates in the hye-election to the Haryana Legislative Assembly from Meham Constituency;

- (b) facts relating to the violent incidents in village Madina and the role of the police authorities therein; and
- (c) any other matter connected therewith or incidental thereto.
- 3. The Commission shall complete its inquiry and submit its report to the Central Government within a period of three months.
- 4. And whereas, the Central Government is of opinion that, having regard to the nature of the inquiry to be made and other circumstances of the case, all the provisions of sub-section (2), sub-section (3), sub-section (4) and sub-section (5) of section 5 of the Commissions of Inquiry Act, 1952 (60 of 1952), should be made applicable to the Commission, the Central Government hereby directs, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the said section 5, that all the provisions of the said sub-sections (2), (3), (4) and (5) of that section shall apply to the said Commission.

[No. IV|15013|1|90-CSR] NARESH CHANDRA, Home Secy. श्री एस० एन० मिश्र, भारत के भूतपूर्व महात्यायवादी के त्याग पन्न देने के परिणाम-स्वरूप हुए रिक्त स्थान पर तीन वर्ष की श्रविध के लिए विश्वविद्यापण श्रनुदान श्रायोग के सबस्य के रूप में नियुक्त करती है।

> [मं० एफ० 4-30/90-यू] -एम० जी० **मांकड, संयुक्त** मंचित्र

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

(Department of Education)

NOTIFICATION

New Delhi, the 19th July, 1990

S.O. 583(E)—In exercise of the powers conferred by Section 5 lead with Sub-Section (4) of Section 6 of the University Grants Commission Act, 1956 (3 of 1956), the Central Government hereby appoints Prof. Ramlal Parikhet Vice-Chancellor, Gujarat Vidyapeeth, to be a member of the University Grants Commission for a term of three years in the vacancy caused by the resignation of Shri L. N. Sinha, former Attorney General of India.

[No. F. 4-30]90-U.I] S. G. MANKAD, Jt. Seey.